सुलेमान

एक जंग-लगी कील

लेखक एवं चित्रकार : विलियम स्टिग

हिंदी अनुवाद : अशोक गुप्ता

इस कहानी का हीरो है
एक साधारण खरगोश -
शिशु सुलेमान. सिर्फ एक
चीज को छोड़कर वह आम
खरगोशों जैसा ही है.

जब कभी वह एक साथ
अपनी नाक खुजलाता और
पैरों की उँगलियाँ हिलाता है
तब वो एक जंग-लगी कील
में बदल जाता है. वापस
खरगोश बनने के लिए उसे
सिर्फ यह सोचना होता, “मैं
कोई जंग-लगी कील नहीं हूँ.
मैं तो एक खरगोश हूँ!" बस.

सुलेमान
एक जंग-लगी कील

लेखक एवं चित्रकार: विलियम स्टिग

सुलेमान, एक साधारण खरगोश था -- सिर्फ एक चीज को छोड़कर. वो जब भी चाहता खुद को एक जंग-लगी कील में बदल सकता था. उसे अपनी इस ताकत का कैसे पता चला?

एक दिन सुलेमान अपने घर के पास बेंच पर बैठा हुआ आसमान की तरफ देख रहा था. अचानक उसने एक-साथ अपनी नाक खुजलाई और पैरों की उँगलियाँ भी हिलाईं. आश्चर्य की बात यह हुई कि वो तुरंत एक छोटी सी सख्त चीज में बदल गया.

वह सब कुछ सुन सकता था, हालांकि उसके कान नहीं थे. वह सब कुछ देख सकता था, हालांकि उसकी आँखें नहीं थीं. उसे तब तक यह समझ ही नहीं आया कि वह किस चीज में बदल गया है, जब तक कि उसकी माँ झाड़ू लगाने नहीं आईं. "बेंच पर यह जंग-लगी कील क्या कर रही है?" उन्होंने पूछा और फिर कील उठाकर कूड़ेदान में डाल दी.

सुलेमान बेचारा चिल्ला भी न पाया, "माँ, यह मैं सुलेमान हूँ!" उसके पास बोलने के लिये जुबान ही नहीं थी. उसको चिंता होने लगी. अब मेरा क्या होगा? क्या मुझे भी शहर के बाकी कूड़े के साथ जिंदगी बितानी पड़ेगी? "मैं यहाँ कूड़ेदान में क्यों पड़ा हुआ हूँ?“

उसने खुद से कहा, "में कील थोड़े ही हूँ, मैं तो एक खरगोश हूँ!"

जैसे ही उसने ऐसा सोचा, वो फिर से खरगोश बन गया. हक़बकाया हुआ वो कूड़ेदान से कूदकर बाहर निकला, और टूल-शेड के पीछे जमीन पर बैठ गया. क्या जो अभी हुआ, वह वास्तव में सच था? हाँ हुआ तो था. तो क्या मैं फिर से उसे करने की हिम्मत करूँ?

उसने हिम्मत करके फिर से वही किया. वो तब तक करता रहा जब तक कि उसे पक्का विश्वास नहीं हो गया कि वह हमेशा ऐसा कर सकेगा. जब उसने अपनी नाक खुजलाई और पैरों की उँगलियाँ हिलाईं, वो एक जंग-लगी कील में बदल गया. और जब उसने सोचा, "मैं कील थोड़े ही हूँ, मैं तो खरगोश हूँ" तो वो वापस खरगोश बन गया.

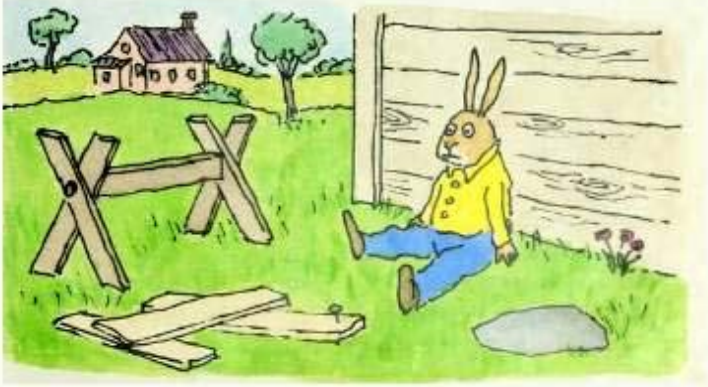

उसके मन में तो आया कि क्यों न मैं घरवालों को दिखाऊं कि मैं एक जादुई खरगोश हूँ. फिर उसने सोचा, छोड़ो, यह बात अभी एक रहस्य ही रहे तो अच्छा है.

रात को भोजन में उसके माँ-बाप, दो भाई और बहन गाजर और मूली के पत्ते चटकारे लेकर खा रहे थे. क्या किसी ने सोचा भी कि खाने की मेज पर उनके साथ कौन बैठा था? किसी ने भी नहीं! सुलेमान मजे लेता हुआ मुस्कराया.

रात को बिस्तर में रजाई के अंदर उसने अपने आपको को जंग-लगी कील में बदल लिया. जब माँ उसे गुड-नाइट कहने आईं, तो उन्हें बिस्तर पर कोई दिखाई ही नहीं दिया. "तुम कहाँ हो, बेटा?" उन्होंने पुकारा. रजाई से मुहँ निकालकर सुलेमान बोला, “यहीं बिस्तर में, और कहाँ?" फिर सीढ़ी से नीचे उतरते हुए माँ ने कहा, "पता नहीं यह सब क्या हो रहा है?"

अगले दिन से वह अपने दोस्तों और घरवालों को चकमे देने लगा. वो लोग कितनी भी कोशिश करते, पर उसे ढूंढ़ नहीं पाते.

और फिर अचानक वो बदमाश दुबारा प्रगट हो जाता -- भोला-भाला सा अकड़ के खड़ा हुआ जैसे कुछ हुआ ही न हो.

उसकी दादी के साथ और भी लोगों ने यही कहा, "समझ में नहीं आता इस लड़के के बारे में. वो कभी यहाँ, कभी वहां, फिर कहीं नहीं!" सुलेमान सबको उलझन में डालकर बहुत खुश होता था.

कुछ दिन बाद वह खुद ही अपनी चालबाजियों से थक गया और जादू को लगभग भूल ही गया. उसे अब तितलियों को पकड़ने में ज्यादा मजा आने लगा. चौपड़ के खेल में वो इतना माहिर हो गया कि वह अपने पिता को भी हरा देता.

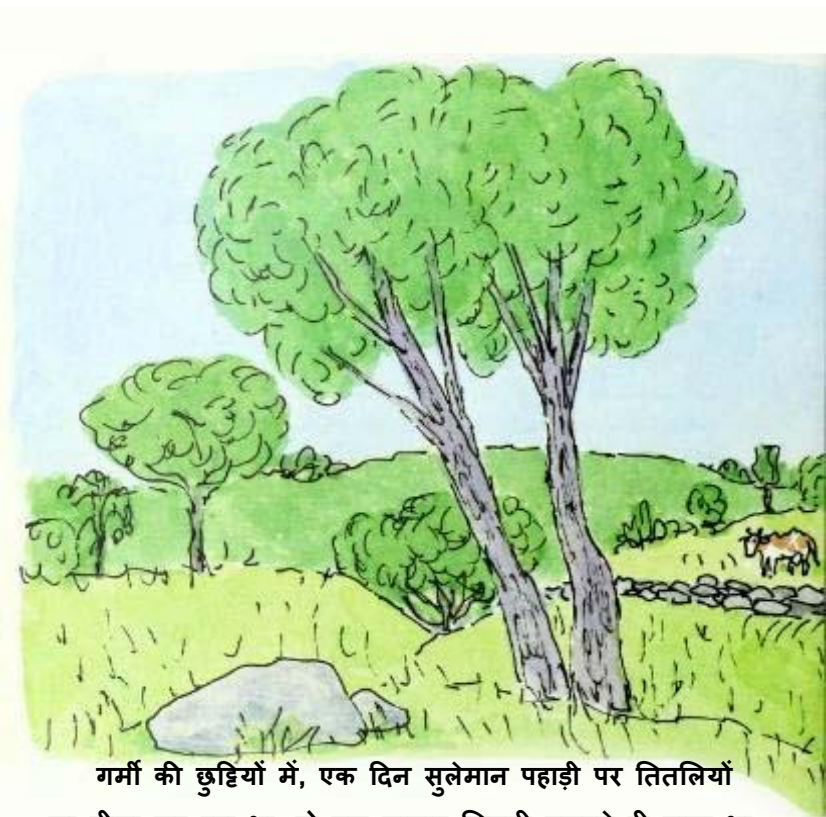

गर्मी की छुट्टियों में, एक दिन सुलेमान पहाड़ी पर तितलियों का पीछा कर रहा था. वो एक नायाब तितली पकड़ने ही वाला था कि उसने एक कर्कश आवाज सुनी, "रुको! अपने हाथ ऊपर करो!" डर के मारे सुलेमान के हाथ से तितली पकड़ने का जाल और डिब्बा दोनों गिर गए.

ठीक उसके पीछे, हाथ में लम्बा चाकू लिये खड़ी थी एक-आँख वाली बिल्ली. "जल्दी करो. आगे बढ़ो," उसने हुक्म दिया.

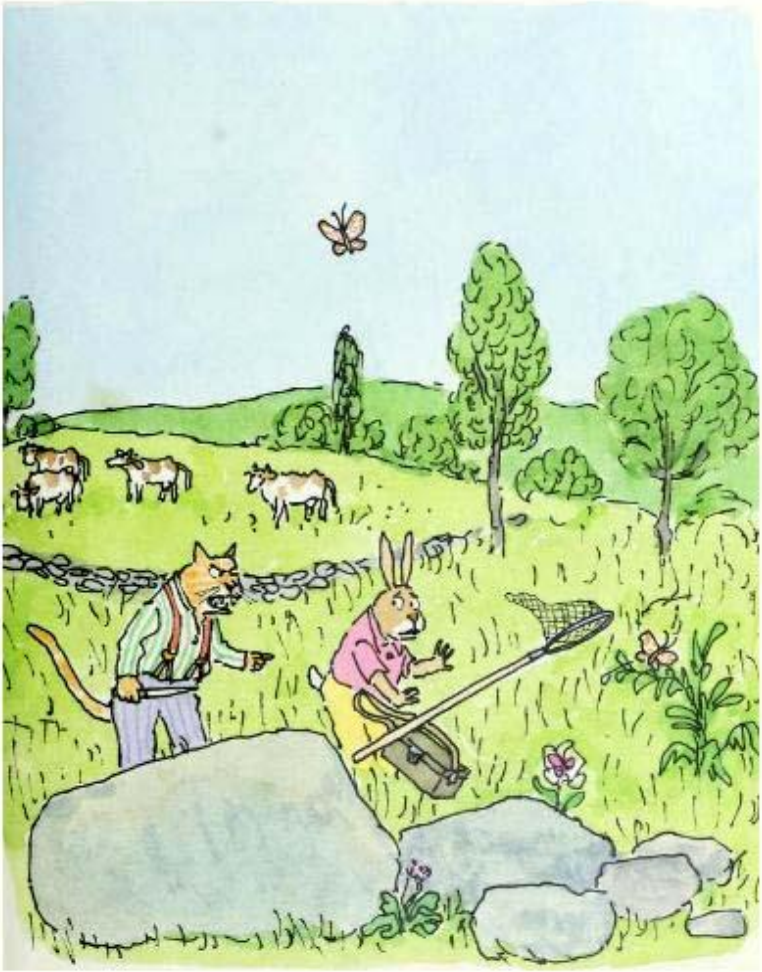

सुलेमान ने हुक्म का पालन करते हुए आगे बढ़ना शुरू किया. बिल्ली पीछे-पीछे और वह उसके आगे. अब तो मेरी मौत के दिन करीब आ गए, वह सोचने लगा. *अब मैं मरने वाला हूँ?* वह जान बचा कर भागा. खतरनाक बिल्ली ने उसका तेजी से उसका पीछा किया.

आखिर वह कब तक दौड़ता? तभी उसे अचानक पुरानी कील वाली तरकीब याद आई. क्या वो काम करेगी?

उसने जल्दी से एक पेड़ के पीछे जाकर अपनी नाक खुजलाई और पैरों की उँगलियाँ हिलाईं. जैसे ही बिल्ली ने झपट्टा मारा, वहां तो कोई सुलेमान ही न था! वहां थे घास, पत्थर, और सिर्फ एक जंग-लगी कील.

सुलेमान के गायब होने से बिल्ली बड़ी उलझन में पड़ गई. खरगोश को ढूढ़ने के लिये कभी वह पेड़ का दायें से चक्कर लगाती, कभी बायें से. यह करते-करते जब बिल्ली के सिर में दर्द होने लगा तब उसने वापस लौटने का निर्णय लिया.

सुलेमान ने सोचा, "चलो, अब मैं खतरे से बाहर हूँ." और वह फिर से खरगोश बन गया. शायद उसने इसमें कुछ जल्दबाजी की. बिल्ली ने जाते-जाते एक बार फिर पीछे मुड़कर देखा तो सुलेमान खड़ा था. वह तुरंत तेजी से वापस आई. बेचारे सुलेमान को अपने दुश्मन के सामने ही खुदको कील में दुबारा बदलना पड़ गया.

"यह तो बड़ी बढ़िया तरकीब है," कहते हुए उसने सुलेमान को अपनी जेब में रखा और घर की तरफ चल पड़ी.

"पता है मेरे पास क्या है?" घर में घुसते ही उसने अपनी पत्नी से पूछा. "सूप के लिये एक मोटा तगड़ा जवान खरगोश!" और उसने वो कील टेबल पर रख दी.

"यही तुम्हारा मोटा तगड़ा जवान खरगोश है?" पत्नी ने पूछा. “तुम्हें क्या पूरा यकीन है, अम्ब्रोस?"

"हाँ, क्लोरिन्डा. असल में यह कील नहीं, एक खरगोश है. जैसे ही यह कील होने का बहाना बनाना छोड़ देगा, यह खरगोश में बदल जाएगा और फिर हम इसको खा सकेंगे." फिर उसने अपनी पत्नी को सुबह की पूरी विचित्र घटना सुनाई.

बिल्लियों के पास एक पिंजरा था जिसमें वे पकड़े हुए उन जानवरों को रखते थे जिनकी उन्हें अभी खाने की जरूरत नहीं थी. क्लोरिन्डा ने कीमती कील पिंजरे में रख दी और अम्ब्रोस ने उसमें ताला लगा दिया. और फिर वे इंतजार करने लगे कि कब वो कील सुलेमान खरगोश में बदले और कब वे उसका सूप बनायें.

दोनों बारी-बारी से पिंजरे पर निगरानी रखते. सुलेमान को क्या हो रहा है वो सब पता था. दो बेवकूफ बिल्लियों का भोजन बनने का उसका कोई इरादा नहीं था. उसने भी निश्चय कर लिया कि वह कील ही बना रहेगा चाहे कितना भी वक्त क्यों न लगे.

अम्ब्रोस और क्लोरिन्डा इंतजार करते रहे, पिंजरे को देखते रहे. जब वो बगल के कमरे में खर्राटे लेते तो सुलेमान खरगोश बन कर पिंजरे की सलाखों को मोड़ने और ताले को खींचने की कोशिश करता. परन्तु इससे कोई फायदा नहीं हुआ.

तीन लम्बे हफ़्तों के बाद, बिल्लियों का धैर्य खत्म होने लगा. क्लोरिन्डा को लगा उसके पति से कोई भूल हुई है. अंत में वह पूछ ही बैठी, "अम्ब्रोस, क्या तुम्हें सौ-प्रतिशत, पक्का विश्वास है कि यह धातु का छोटा-सा टुकड़ा सचमुच में एक खरगोश है?"

उसने जवाब दिया, "प्रिय, अगर मैं सचमुच में बिल्ली हूँ, और मुझे विश्वास है कि मैं हूँ, तो यह कील भी खरगोश है."

"साबित करो!" वह बोली.

इस बेहूदे सुझाव पर अम्ब्रोस को बहुत गुस्सा आया. उसने पिंजरे का ताला खोलकर कील बाहर निकाली और चिल्लाकर बोला, "ओ कबाड़ के टुकड़े, अपनी चालबाज़ी बंद करो, और जल्दी से खरगोश बन जाओ." सुलेमान ने उसकी बात अनसुनी की.

अम्ब्रोस ने लात मार कर पिंजरे का दरवाजा खोला और तेजी से बाहर आया. सुलेमान ने सोचा, "हुर्रे, अब तो मैं जीत गया!," अम्ब्रोस अब मुझे बाहर फेंक देगा. लेकिन ऐसा नहीं हुआ. अम्ब्रोस ने हथौड़ा उठाया और बैंग-बैंग.... सुलेमान-कील को उसने घर के बाहर वाली दीवार पर ठोक दिया और इतराता हुआ वहां से चला गया.

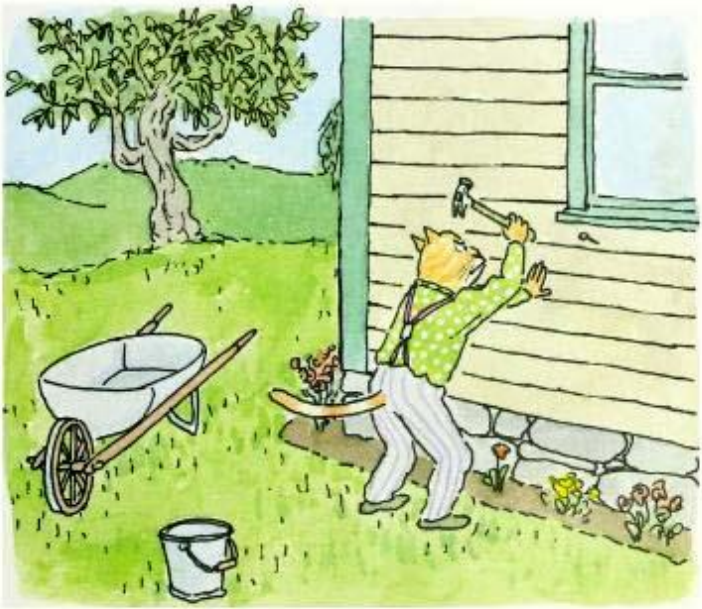

"आज की रात बहुत महत्व की रात है," सुलेमान ने सोचा. जैसे ही बिल्लियाँ सोने गयीं, उसने अपने आप से जादुई शब्द कहे. पर जब भी वह उन शब्दों को दोहराता, उसका आकार बड़ा होता जाता और वह लकड़ी में और ज्यादा फंसता जाता.

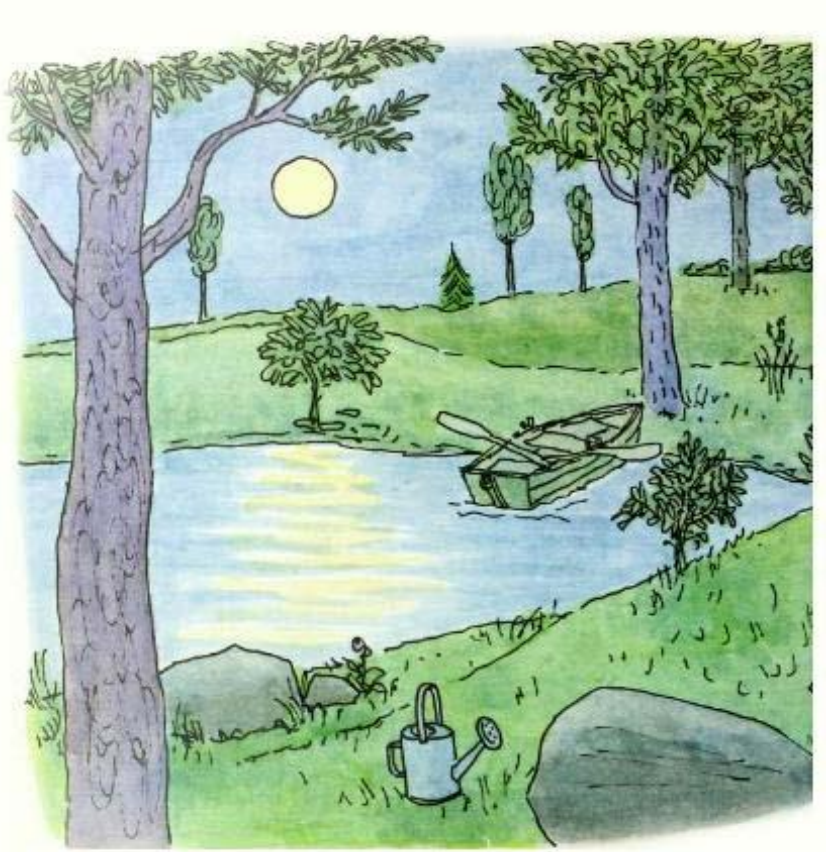

"क्या मुझे अब लकड़ी में इसी तरह तब तक फंसे रहना होगा जब तक कि लकड़ी सड़ न जाए और उसकी पकड़ कम न हो जाए? इसमें तो सैंकड़ों साल लग सकते हैं? क्या मैं तब तक जिन्दा रह सकूंगा?" उसने सोचा, "क्या कील की मौत भी होती है?"

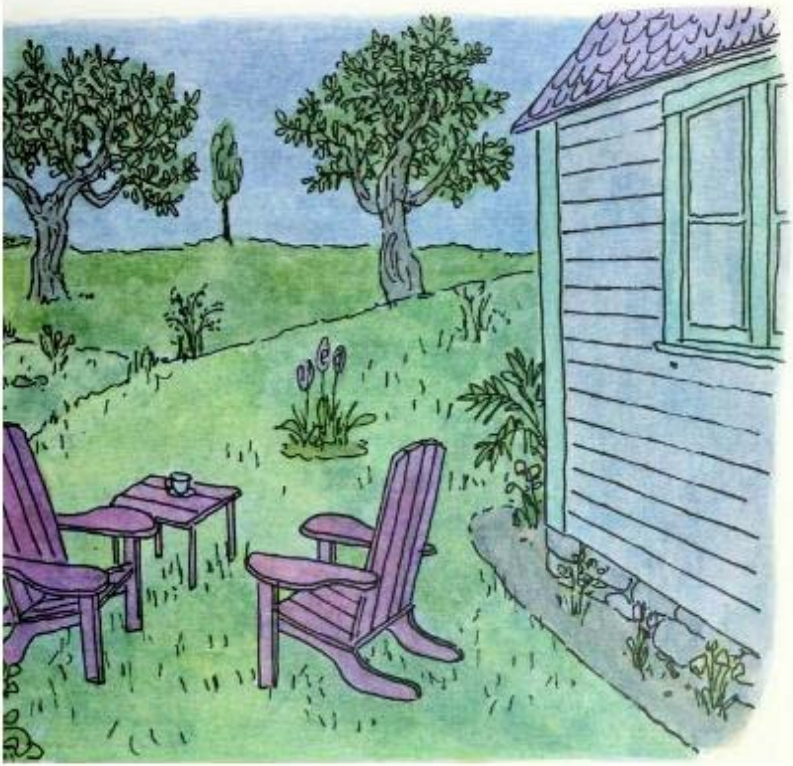

दिन गुजरने लगे. टाइम पास करने के लिए सुलेमान ने गिनना शुरू किया लाखों तक, करोड़ों तक, अरबों तक.

कभी-कभी उसे दुनिया बड़ी खूबसूरत दिखती थी. लकड़ी में फंसे रहने के बावजूद भी वह यह सोचकर संतुष्ट था कि आखिर वह भी तो प्रकृति का एक छोटा-सा हिस्सा था. परन्तु अब उसकी सबसे दिली इच्छा थी अपने घरवालों के पास पहुंचने की.

उसके माँ-बाप कितने दुःखी होंगे, वह सोच रहा था. उन्हें तो मालूम ही नहीं होगा कि वो किस हाल में था. अपने बच्चे के बिना वे कितने पीड़ित होंगे?

अम्ब्रोस अक्सर उसकी ओर घृणा से देखता था. सुलेमान को यह ख़राब नहीं लगता था. कम-से-कम अम्ब्रोस के रहने से उसके जीवन का कुछ सूनापन तो कम होता था.

एक बार क्लोरिन्डा ने उसे इतने दया-भाव से देखा कि उसका रोने का मन हुआ. लेकिन वो तो यह सोच रही थी कि देखो कितने अफ़सोस की बात है एक कि बढ़िया भोजन यहाँ दीवार में अटका पड़ा है.

एक दिन अम्ब्रोस घर के पीछे लॉन में टहल रहा था. उसने अपने पाइप के तम्बाकू को दियासलाई से सुलगाया और तीली ऐसे ही फेंक दी. इससे पहले कि वह कुछ कर पाता, जमीन में पड़ी सूखी पत्तियों ने आग पकड़ ली और लपटें घर के पास तेजी से पहुँच गयीं.

उसने अपने हैट से आग बुझाने की कोशिश की.
तभी क्लोरिन्डा चिल्लाती, दौड़ती आयी, "अरे मैं तो जल गई.
बचाओ." दोनों सहायता के लिए दौड़े.

जब लपटें सुलेमान तक पहुंचीं, पहले तो उसे बुखार आता हुआ लगा. इसके बावजूद कि वह हिल-डुल नहीं सकता था, उसे फुर्ती आती महसूस हुई, जैसे उसमें जान वापस आ गई हो, और फिर उसे अपना भविष्य उज्जवल दिखने लगा.

थोड़ी ही देर में पड़ोसियों का झुंड वहां पहुँच गया. वे तालाब से बाल्टियों में पानी भरकर एक-दूसरे को देने लगे और जलते मकान पर पानी फेंकने लगे. परन्तु आग अपने काम को निबटाने में लगी हुई थी.

घर सुलगते हुए अंगारों और कीलों का एक ढेर बन गया. उन कीलों में से एक थी -- सुलेमान. थोड़ी देर पहले वह लाल-सुर्ख गर्मी का आनंद ले रहा था, और जैसे ही मनहूस बिल्लियाँ वहाँ से गईं, उसने ठंडा होने का मजा लेना शुरू किया.

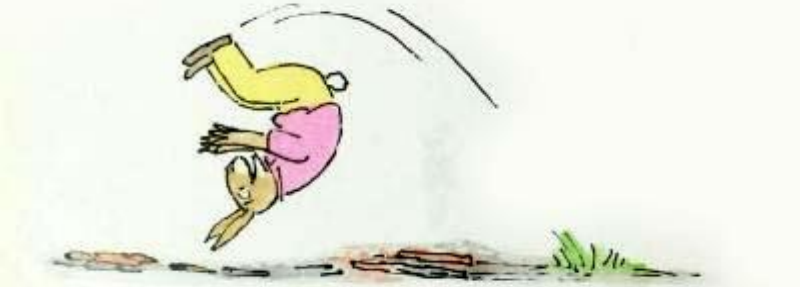

बिल्लियों के चले जाने के बाद, सुलेमान फिर से अपने असली रूप, खरगोश, में बदल गया. अंततः! उसने लम्बी साँस ली और एक जोर की कलाबाजी लगाई और फिर अपने घर की ओर तेज़ी से दौड़ा.

उसके उदास परिवार को जब उसका तितलियाँ पकड़ने का जाल और डिब्बा मिला, तो उन्हें पक्का विश्वास हुआ कि बेचारे सुलेमान को कोई जानवर खा गया होगा. परन्तु जब उन्होंने सुलेमान को जिन्दा, तेजी से घर में घुसते देखा तो आँखों पर भरोसा नहीं हुआ. उत्तेजना और उछल-कूद के बाद सब उसे गले लगाने और चूमने को दौड़े.

थोड़ी देर बाद जब सब शांत हो गये, तब सुलेमान ने उन्हें अपनी पूरी कहानी सुनाई और सारा रहस्य उजागर किया. सबके सामने वह जंग-लगी कील में बदला, और वापस प्यारे सुलेमान के रूप में.

उन्होंने उससे ऐसा आगे कभी नहीं करने की विनती की. भगवान न करे तुम्हें ऐसा करने की जरूरत कभी पड़े!!

***